ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 10 | कुल पृष्ठ-8 | 29 नवम्बर से 5 दिसम्बर, 2018 | दयानन्दाब्द 194 | सृष्टि सम्वत् 1960853119 | सम्वत् 2075 | मा.शी.कृ.-07

आर्य समाज टाण्डा, जिला अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश का 127वाँ वार्षिकोत्सव 20 से 23 नवम्बर, 2018 को डी.ए.वी. एकेडमी टाण्डा के विशाल प्रांगण में अत्यन्त उत्साह एवं जोश-खरोश के वातावरण में हुआ सम्पन्न

आर्य समाज को पुनः तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने की नितान्त आवश्यकता है
– आनन्द कुमार

सम्पूर्ण मानवता की सुख-शांति एवं समृद्धि के लिए आर्य समाज निरन्तर प्रयत्नशील
– स्वामी आर्यवेश

संसार में ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत वेद है
– वेद प्रकाश श्रोत्रिय

जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता को मिटाने के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को जागृत करने की आवश्यकता
– डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

आर्य समाज टाण्डा जिला अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश का 127वाँ वार्षिकोत्सव एक विशाल महासम्मेलन के रूप में 20 से 23 नवम्बर, 2018 को डी.ए.वी. एकेडमी टाण्डा में विशाल स्तर पर मनाया गया। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, आर्य युवा सम्मेलन, नारी सशक्ति सम्मेलन, वेद सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन आदि के अतिरिक्त शंका-समाधान, कवि सम्मेलन एवं विशाल शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया था। इसी प्रकार जरूरतमंद लोगों को कम्बल वितरण करके जनहित का एक विशेष आयोजन इस अवसर पर आयोजित किया गया। डी.ए.वी. एकेडमी टाण्डा के छात्र एवं छात्राओं तथा मिश्री लाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा की वीरांगनाओं द्वारा शौर्य प्रदर्शन तथा योग एवं कराटे प्रदर्शन का भव्य एवं आकर्षक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस चार दिवसीय भव्य महोत्सव में यज्ञ के ब्रह्मा पद को आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने सुशोभित किया तथा गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के युवा विद्वान कुलदीप कुमार आर्य एवं मनोज कुमार आर्य ने सुन्दर वेदपाठ कर यज्ञ में अपनी भूमिका निभाई। श्री रामपूजन आर्य यज्ञ के संयोजक रहे। प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से यज्ञ एवं 9 से 10.30 बजे तक भजनोपदेश एवं आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहा तथा सायंकाल प्रतिदिन 6.30 बजे से 7 बजे तक सामूहिक संन्ध्या का अत्यन्त प्रभावशाली आध्यात्मिक वातावरण बनता था।

20 नवम्बर, 2018 को प्रातः 10.30 बजे से 11.30 बजे तक ध्वजारोहण का विशेष आयोजन हुआ जिसमें प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अपने कर-कमलों से ओ३म्ध्वज का आरोहण कर ध्वज के सम्बन्ध में विशेष प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में डी.ए.वी. एकेडमी के छात्र-छात्राओं द्वारा ध्वज सम्मान एवं मिश्री लाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज की छात्राओं द्वारा ध्वज गीत गाया गया।

अपरान्ह 2 बजे से 5 बजे तक सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

मानव समाजोत्थान की दिशा में वैदिक वांगमय में प्रेरक तत्व

– डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री (महोपदेशक)

विश्व के साहित्य के इतिहास में जिस प्रकार संस्कृत भाषा अत्यन्त प्राचीन मानी जाती है, उसी प्रकार संस्कृत भाषा में उपनिषद् वैदिक वाङ्मय का महत्त्व भी न केवल अत्यन्त प्राचीनतम है अपितु उपयोगिता की दृष्टि से यह आज भी मानव समाज के लिए न केवल अत्यन्त आवश्यक है अपितु हमारे संस्कृत साहित्य के लिए यह आज भी प्रेरणा का स्रोत है। माहभारत के अनुशासन पर्व में वैदिक वाङ्मय की प्राचीनता एवं उपयोगिता के संदर्भ में एक श्लोक मिलता है –

यानीहागमशास्त्राणि याश्च काश्चित् प्रवृत्तयः।
तानि वेदं पुरस्कृत्यं प्रवृत्तानि यथाक्रमम्।। महा. 122/4

याज्ञवल्क्य स्मृति में भी लिखा है –

न वेदशास्त्रादन्युतु किंचिंच्छास्त्रं हि विद्यते।
निःसृतः सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रात् सनातनात्।। याज्ञवल्क्य 12/1

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सामाजिक एवं व्यावहारिक ज्ञान के लिए भी वैदिक वाङ्मय के उपदेश हमारे लिए प्रारम्भ से ही उपलब्ध रहे हैं। इन समस्त उपदेशों का मूल हमारे भारतीय वाङ्मय में वेद ही रहा है। मनुस्मृति में तो लिखा है कि वेदशास्त्र के वेत्ता को राज्यव्यवस्था, सैन्यनीति तथा दण्डनीति आदि सामाजिक एवं राजनैतिक प्रशासन का भी पूर्ण ज्ञान होता है –

सेनापत्यं च राज्यं दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।। मनु. 12/100

इस प्रकार वैदिक वाङ्मय की उपयोगिता हमारे लिए आवश्यक प्रतीत होती है। मध्यकाल में वैदिक वाङ्मय का अध्ययन बहुत कम हो गया था। वेदों की उपयोगिता अनेक आचार्यों ने केवल यज्ञ याग में मंत्र पाठ तक सीमित कर दी थी। वेद कुछ निहित लोगों की ही वस्तु बनकर रह गये थे। यह माना जाने लगा कि 'यज्ञार्थं वेदा अभिप्रवृत्ता' अर्थात् वेदों की रचना का उद्देश्य केवल मात्र यज्ञ भूमि तक ही है। वेद मंत्रों में व्यक्त विचार हमारे दैनिक जीवन में कितने उपयोगी तथा मानव समाज के कल्याण के लिए कितने आवश्यक है? इसका आधुनिक युग में परिचय कराने का श्रेय 19वीं शताब्दी के महान वेद चिन्तक महर्षि दयानन्द को जाता है।

महर्षि दयानन्द ने वेद को कुछ सीमित पढ़ने–पढ़ाने वाले व्यक्तियों के बीच से निकालकर इसको व्यापक आयाम दिया। स्वयं वेद में लिखा है कि इसका ज्ञान मानव मात्र के लिए है, केवल किसी एक व्यक्ति विशेष या वर्ग विशेष के लिए नहीं। यह तो समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपयोगी एवं अधिकृत है –

यथेमां वाचै कल्याणीमावदानी जनैभ्यः
बृह्माराजन्याभ्याशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारंणाय च।। यजु. 26/2

मध्यकाल में स्त्रियाँ, शूद्र एवं अन्य बहुत सारे पिछड़े लोग इसलिए नहीं पढ़ पाते थे क्योंकि अध्ययन का चरम ज्ञान 'वेद' को उन्हें पढ़ने का अधिकार नहीं प्राप्त था। इसी कारण वेद के पढ़ने वालों की संख्या सीमित होती गई तथा उसकी सामान्य समाज में उपयोगिता भी अल्पतम होती गई। महर्षि दयानन्द 19वीं शताब्दी के प्रथम ऐसे भाष्यकार थे जिन्होंने वेद को यज्ञ के मात्र कर्मकाण्ड से हटाकर उसकी उपयोगिता का डिण्डिम नाद करते हुए उसकी सामाजिक उपयोगिता बताई तथा अपने वेद भाष्य में सामान्य मानवीय व्यवहार का व्याख्याता वेद है, इसको स्वीकार किया। इसी कारण उनका वेदभाष्य सामान्य तथा पूर्व आचार्यों की याज्ञिक पृष्ठभूमि की व्याख्या की लीक से हटकर एक ऐसा व्यापक अर्थ प्रकट करने वाला तथा सब प्रकार के मानवीय सामाजिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक अर्थ की व्याख्या करने वाला माना गया।

1. पुरुषार्थ प्रेरित यथार्थवाद – मध्यकालीन चिन्तन जहां मनुष्य में पराधीनता, हताशा, जुगुप्सा, दैन्य एवं आत्मग्लानि का भाव भरता है वहीं वेद का चिन्तन हमें आज भी पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करता है। वैदिक संहिताओं ने हमें आशा, उद्यम तथा पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करते हैं। यहां पापोऽहं पाकर्माऽहं पापात्मा पाप सम्भवः का उद्घोष नहीं है। यजुर्वेद में कहा गया है – ''शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि'' अर्थात् हे जीव! तू शुद्ध है, तेज स्वरूप है। वेद में संतान के वीर एवं बलवान होने की कामना करते हुए लिखा है – ''अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु'' इसमें समग्र विश्व को आर्य श्रेष्ठ बनाने की कामना है – ''इन्द्र वर्धन्तो असुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।''

अथर्ववेद कहता है –

यथा सूर्यो अतिभाति यथांऽस्मिन्तेज आहिंतम्।
एवा में वरणो मणिः कीर्ति भूतिं नि यच्छतु।।

अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि वह प्रार्थना करे तथा विचारे कि जैसा तेज सूर्य में समाविष्ट है वैसा ही तेज एवं ऊर्जा हमारे अन्दर विद्यमान हो तथा हमें स्वात्म प्रकाश से परिपूर्ण होकर संसार में चमकाये।

2. सदाचारोन्मुख जीवन – वेद में सामाजिक स्वास्थ्य एवं आदर्श प्रेरित मानव समाज के लिए नाना प्रकार की मर्यादाओं की भी चर्चा की गई है। ऋग्वेद में लिखा है –

सप्त मर्यादाः कुवयंस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यैहुरो गांत्।।

अर्थात् हिंसा चोरी, व्याभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्य भाषण और इन पापों को करने वाले दुष्टों का असहयोग का नाम ही सप्तमर्यादा है। इनमें से एक भी मर्यादा का उल्लंघन करने वाला एक पाप करता है और वह पापी होता है। अथर्ववेद में लिखा है –

न द्विषन्नश्नीयात् न द्विषदतोऽन्नमश्नीयात्।

अर्थात् न द्वेष करता हुआ अन्न खाये और न ही द्वेषी का अन्न खाये। वेद में जुआ खेलने की निन्दा करते हुए कर्मठ जीवन बिताकर कृषि आदि द्वारा परिश्रमपूर्वक धन प्राप्त करने की प्रशंसा की गई है। ऋग्वेद में आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया – ''अक्ष सूक्त'' इसका प्रमाण है। वहाँ स्पष्ट लिखा है –

अक्षैमां दीव्यः कृषिमित्कृंषस्व वित्ते रंमस्व बहु मर्न्यमानः।।

मीठा और सुन्दर वचन बोलने के लिए वेद प्रेरित करते हुए कहते हैं – **'घृतात् स्वादीयो मधुंनश्च वोचत।।**

अर्थात् घृत और मधु से भी मीठा वचन बोलना चाहिए।

विश्व बंधुत्व की भावना – वेदों में विश्व बंधुत्व की भावना अतिशय दृष्टिगत होती है। यहां अतिक्षुद्र संकीर्ण भावना या प्रतिस्पर्धात्मक राष्ट्रवाद की भावना से ऊपर उठकर सम्पूर्ण पृथ्वी को एक विशाल राष्ट्र के रूप में निरूपित करते हुए इसके समस्त प्राणियों में एक ऐसी विश्वबन्धुत्व की भावना को समाहित करने का उपदेश दिया गया है जो अन्य साहित्य में दुर्लभ है। यजुर्वेद में लिखा है –

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुसा समींक्षामहे।।

अर्थात् मैं प्राणीमात्र को मैत्रीपूर्ण दृष्टि से देखूँ तथा समस्त जीव भी मुझे मैत्रीपूर्ण निर्भय दृष्टि से देखें। इस प्रकार हम एक दूसरे के लिए मित्रवत् रहें।

सामवेद के एक मंत्र में लिखा है कि स्तुति करने वालों। तुम सब आओ, हम सब लोग एक साथ बैठकर प्रभु का गुणगान करें तथा उसकी महिमा भी बखानें –

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत।

यह भूमि मेरी माता है तथा मैं इसका पवित्र पुत्र हूँ।

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद में एक विश्वजनीन भावना वर्णित है जो आजकल के स्वार्थ प्रधान मानव समाज में एक ज्योतिपूर्ण आशा का संचार करता है।

4. पारिवारिक जीवन के संदर्भ में वेद – वेदों में नारी को भी पुरुष के समान ही परिवार निर्माण में एक सहयोगी की भूमिका के रूप में देखा गया है। उसका स्थान किसी भी प्रकार से कम नहीं है। उसे परिवार में आदर के साथ 'सम्राज्ञी' की पदवी प्रदान की गई है जो उसके लिए श्वसुर–सास और ननद की दृष्टि से भी है –

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भंव।
ननांन्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिं देवृषुं।।

वह पति एवं घर के लिए पूर्ण सुखकारी होती है।

स्योना भवं श्वर्शुरेभ्यः स्योना पत्यें गृहेभ्यः।

वेद में पत्नी को सदा शांत एवं मधुरवाणी में ही पति से बात करने की चर्चा है क्योंकि पारिवारिक शांति के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

जाया पत्ये मर्धुमती वाचं वदतु शन्तिवाम्।

पति पत्नी को चक्रवाक अर्थात् चकवा–चकवी के समान एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक रहने की भी चर्चा की गई है।

चक्रवाकेव दम्पति।

पारिवारिक संदर्भ में पिता–पुत्र, भाई–बहन तथा भाई–भाई एवं बहन–बहन का भी आपसी सम्बन्ध विद्वेषरहित हो इसकी स्पष्ट चर्चा की गई है –

अनुव्रतः पितु भ्रार्तर द्विक्षन् मा स्वासारभूत स्वसां।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक वाङ्मय हमें बहुविधि व्यापक रूप से जीवन, समाज व्यवस्था बिन्दुओं का समग्र रूप से चिन्तन प्रस्तुत करते हुए उत्थान को प्रेरित करता है।

यह सामंजस्य एवं प्रगतिशीलता ही वेद की सबसे बड़ी विशेषता है। इसी कारण यह हमें आज भी उतना ही उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है जितना कि भूतकाल में कभी था।

लेखक साहित्य अकादमी एवं राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित हैं।
– बी–21, आनन्दनगर, जेल रोड, मो.:–9451074123

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 23260985

उपनिषत् कालीन शिक्षा का स्वरूप है – यम और नचिकेता का संवाद

— आचार्य विश्वंभर

भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परंपरा ऋषि मुनियों के द्वारा की गई हजारों वर्षों की साधना और गहनतम तत्वानुभूति के ऊपर प्रतिष्ठित है। हमारी भारतीय संस्कृति 'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष' इन चार प्रकार के पुरुषार्थों में अभ्युदय की प्राप्ति के लिए होने वाला निःश्रेयसरूप मोक्ष की कामना करती है और यह हमारी वैदिक संस्कृति मौत को ही मनुष्य का अंतिम लक्ष्य मानती है। कालज्ञ योगियों, ऋषियों तथा मुनियों ने जैसे महान विभु, सूक्ष्मतम, अखंड स्वरूप परमात्मा का साक्षात्कार किया था ठीक उसी प्रकार से मनुष्य मात्र को उस तत्व का दर्शन कराने के लिए उपनिषद जैसे गूढ़ रहस्यमय शास्त्र की रचना हुई। अब आइए विचार करते हैं। उपनिषत् कालीन शिक्षा का स्वरूप कैसा रहा होगा?

प्रत्येक माता–पिता अपने संतानों की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही पूरी कराते थे। माता की शिक्षा संतानों के ऊपर अत्यधिक प्रभावकारिणी होती है। इसलिए तो सुशीलता आदि की शिक्षा माता ही दिया करती थी। उसके बाद पिता भी व्यावहारिक शिक्षा घर पर ही दिया करता था। **शतपथ ब्राह्मण** का यह वाक्य **'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।'** (14.6.10.2) उपनिषत् कालीन समय में पूर्ण रूप से चरितार्थ था। इस वाक्य का अर्थ करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती लिखते हैं – 'वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य! वह संतान बड़ा भाग्यवान है जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों।' (सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीय समुल्लास)। महाभारत अनुशासन पर्व में कहा गया है – **'नास्ति मातृसमो गुरुः** (106.65)।। अर्थात् माता के समान कोई गुरु नहीं है। उपनिषद् के काल में भी समस्त शिक्षा का आधार माता ही हुआ करती थी। करणीय–अकरणीय आदि की शिक्षा माता ही दिया करती थी। इसलिए आचार्य के पास जाने से पहले प्रारंभिक बाल शिक्षा का ग्रहण प्रत्येक बालक कर चुका होता था। इसलिए तो छोटा सा बालक अभी गुरुकुल जाने की अवस्था में ही था, वह नचिकेता अपने पिता को कहता है –

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददद्।।
— कठोपनिषद 1.3।।

जब वाजश्रवस ऋषि मुक्ति की उज्ज्वल भावना से प्रज्ज्वलित होते हुए अपना संपूर्ण स्व दान में दे रहे थे। बालक नचिकेता यह संपूर्ण दृश्य गंभीरता पूर्वक देख रहा था। तभी तो वह कहता है – हे पिताजी! जो अब पानी पीने में भी समर्थ नहीं है, घास भी नहीं खा सकती, दूध देने का सवाल तो उत्पन्न नहीं होता, इंद्रियां भी काम करने में असमर्थता जाहिर कर रही हैं, ऐसी–ऐसी गौवों को दे करके आप क्या कर रहे हैं? क्योंकि ऐसी–ऐसी वस्तुओं को देने वाला व्यक्ति, जहां आनंद का पूर्णतया अभाव है, ऐसे लोकों को प्राप्त हो जाता है। जब वह छोटा सा बालक अपने पिता से पूछता है – मुझे किसको दोगे? **कस्मै मां दास्यसीति?** पिता के उत्तर को सुनकर के (**मृत्यवे त्वा ददामीति)** बालक नचिकेता सोचने लग जाता है – बहुतों में मैं प्रथम हूँ और बहुतों में मैं मध्यम हूँ। तो मृत्यु को मेरे से क्या सिद्ध हो सकता है?

ऐसा विशिष्ट चिंतन उस परिवार में ही संभव हो सकता है, जिसमें माता–पिता और अन्य जन नित्य प्रति तात्त्विक चिन्तन और विचार–विमर्श करते हों। माता–पिता आदि कब ऐसे चिन्तन करते होंगे, जब वे लोग **'स्वाध्यायान्मा प्रमदः। स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'।** (तैत्तिरीय उपनिषद् 1.11) इन गुरुवचनों को आजीवन चरितार्थ करते रहे होंगे। इससे भी अनुमान कर सकते हैं कि उस समय की शिक्षा व्यवस्था इतनी मजबूत थी कि, गुरुकुल से स्नातक होकर के जाने के पश्चात् भी उनके जीवन में गुरुकुलीय परम्परा जीवन वाहिनी के रूप में हुआ करती थी।

वाजश्रवस ऋषि के द्वारा कहे हुए मृत्यु शब्द का क्या अर्थ हो सकता है?

अथर्ववेद ब्रह्मचर्य सूक्त में कहा है –

आचार्यो मृत्युः वरुणः सोम औषधयः पयः।
जीमूता आसन्त्सत्वानस्तैरिदं स्वराभृतम्।।
11.5.14 ।।

इस मन्त्र में आचार्य को मृत्यु कहा गया है क्योंकि आचार्य निश्चित रूप से दूसरा जन्म देता है। दूसरा जन्म पाने के लिए वर्तमान जीवन को मिटाना ही होगा। अथवा दूसरे जन्म को पाने के लिए वर्तमान जीवन में मरना आवश्यक है। ब्रह्मचारी प्रथम अवस्था को मिटा करके ही दूसरा जन्म अथवा विद्वत्ता को प्राप्त कर सकता है। स्वयं के पास वर्तमान की स्थिति को मिटाने की शक्ति उसके पास नहीं होती। वह सामर्थ्य तो केवल आचार्य के पास ही होता है। पूर्ववर्ती संस्कारों को मिटाकर के नवीन संस्कार देने का सामर्थ आचार्य ही रखता है। जैसे औषधियाँ रोगों का शमन करके आरोग्य प्रदान करती है, ठीक वैसे ही आचार्य भी छात्रों की मलिनता को दूर करके स्वच्छता प्रदान करके नवीन मानव बना देता है, इसलिए आचार्य को मृत्यु कहा गया है।

जब आचार्य के पास नचिकेता जाता है तब आचार्य कहते हैं – हे देवता! नमन के योग्य ब्रह्मन, हे अतिथि देव। आपको नमस्कार हो, आपने तीन रात्रियों तक मेरे आवास पर बिना भोजन किए निवास किया, इसलिए आप प्रत्येक रात्रि के बदले एक–एक करके तीन वरों को, वरदानों को मांग लीजिए।

तिस्त्रा` रात्रीय´दवात्सीग´ृह` मेऽनश्नन्ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्स्वस्ति मेऽस्तु, तस्मात् प्रति त्रीन्वरान्वृणीष्व।।
1.9।।

इन पंक्तियों से कह सकते हैं कि अतिथि के रूप में आए हुए व्यक्ति का सम्मान कितना होना चाहिए। हमारी वैदिक संस्कृति में कहते हैं – **अतिथिदेवो भव।** इस वाक्य की चरितार्थता भी उपनिषत् कालीन समाज में पूर्ण रूप से ही हुआ करती थी। अतिथि के रूप में अपने से वयः में छोटा ही क्यों ना हो, उसका आतिथ्य सम्मानजनक रूप में ही हुआ करता था।

तीन दिन तक उपवास करने का तात्पर्य – पढ़ने के इच्छुक व्यक्ति को आगे चलकर ब्रह्मचर्य आश्रम में जीना है। जहां पर भोग की प्रवृत्ति को छोड़कर के संयमित और नियमित दिनचर्या में चलना है। जैसे मां के गर्भ में स्थित बालक स्वयं खा नहीं सकता, देख नहीं सकता इत्यादि अपनी मर्जी से कोई भी काम नहीं कर सकता। माता के अनुसार ही उसको रहना होता है। माता जो चीज खायेगी, उस गर्भस्थ बालक को भी वही चीज खानी पड़ती है। वहां पर वह बालक माता का होकर रहता है। ठीक उसी प्रकार से ब्रह्मचर्य काल में विद्यार्थी को आचार्य का होकर के रहना पड़ता है। आचार्य के हिसाब से उसको जीना होता है। इसी स्थिति की भूमिका के रूप में तीन दिनों का उपवास कराया जाता था। कहा भी है –

ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
अथर्ववेद 11.5.3 ।।

जहां तक आज की शिक्षा व्यवस्था में अर्थ की प्रधानता रह गई जिसने अर्थ का अर्जन ज्यादा से ज्यादा किया वह ही सफल माना जाता है। चरित्र, नैतिकता, अनुशासन, संस्कृति और सभ्यता की शिक्षा आज प्रायः नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति आज 'मैं' के व्यक्तिगत दायरे से बाहर ही नहीं निकल पाता। सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय चिंतन तक पहुंच ही नहीं पाता। किंतु, उपनिषत्–कालीन शिक्षा–व्यवस्था में प्राथमिकता के रूप में समान ही रहा करता था। इसीलिए तो बालक नचिकेता प्रथम वर के रूप में पिता को सुख पहुंचाने की इच्छा से बोलता है –

शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्यात् वीतमन्युर्गौतमो माभिमृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं मामभिवदेत्प्रतीत एतत् त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे।। 1.10।।

अर्थात हे आचार्य देव! प्रथम वर के रूप में मैं यही मांगता हूं कि मेरे पिता, जो कि अशांत हो कर मुझको आपके पास भेज रहे हैं, वह दुखी भी हो रहे हैं। वह मेरे प्रति शांत चित्त हो जाएं और जब मैं यहां से लौटकर घर जाऊं तब वह मेरे से प्रसन्न चित्त हो करके बात करें।

नचिकेता ऐसा भी कह सकता था, हे देव! मेरे क्रोध को, पिता के क्रोध से अधिक बढ़ा दो। उनकी असूया से मेरी असूया को अधिक कर दो। किंतु वह बालक नचिकेता ऐसा नहीं कहता। क्योंकि उस समय की शिक्षा व्यवस्था से बच्चा–बच्चा प्रभावित था, जहां पर सामाजिक चिंतन की ही प्राथमिकता थी। प्रथम वर को आचार्य के द्वारा स्वीकार करने के पश्चात् नचिकेता आगे के दो श्लोकों से द्वितीय वर मांगता है –

स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति न तत्र त्वं न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाशनायापिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।12।।
स त्वमग्निं स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि त्वं श्रद्धानाय मह्यम्।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण।। 13

अर्थात नचिकेता बोलता है – स्वर्ग लोक से बढ़कर कोई सुखकारी नहीं है क्योंकि वहां भय का, वृद्धत्वं का पूर्णतया अभाव है। दोनों भूख और प्यास को पार कर के दुःख से दूर रहकर आनंद भोगते हैं। हे मृत्युदेव! यमाचार्य! आप स्वर्ग की प्राप्ति के लिए साधनभूत अग्नि को जानते हैं। मुझको श्रद्धालु समझकर इस अग्नि विद्या का उपदेश कीजिए। स्वर्ग लोक में रहने वाले अमृतत्व को प्राप्त कर लेते हैं, इसलिए द्वितीय वर के रूप में आप से यही मांगता हूं। इन वाक्यों से नचिकेता अपने उत्साह और दृढ़ता को और अधिक उजागर कर रहा है। क्योंकि वह जानता था, जब तक ज्ञान के पिपासु के रूप में अपने को परिचित नहीं कराऊंगा तब तक आचार्य ऐसी गूढ़ विद्या को नहीं कहेंगे। इस प्रसंग को पढ़ कर ऐसा अनुमान कर सकते हैं कि उपनिषत् कालीन शिक्षा–व्यवस्था में पात्रता के अनुरूप ही शिक्षा दी जाती थी। उसके वर को सुनने के पश्चात् आचार्य कहते हैं –

प्र ते ब्रवीमि तदु मे निबोध स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन्।
अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां विद्धि त्वमेतं निहितं गुहायाम्।। 14 ।।

अर्थात हृदयगुहा में रहने वाली, अनन्तलोक की प्राप्ति कराने वाली उस अग्नि को मैं भलीभांति जानता हूं। हे नचिकेता! तुम भी इस विद्या को समझ लो। नचिकेता की पात्रता को देखकर के आचार्य कहते हैं – यह अग्नि जिसका मैंने तुम्हें उपदेश किया है, उस अग्नि को मैं नचिकेता नाम भी देता हूं। उपनिषत् कालीन शिक्षा व्यवस्था में आचार्य योग्य छात्र को प्रोत्साहित भी करते थे। तभी तो जिज्ञासु छात्र के नाम से ही उस अग्नि का परिचय आचार्य करा रहे हैं। पश्चात् तृतीय वर मांगते हुए नचिकेता कहता है –

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वरस्तृतीयः।। 20।।

अर्थात् जो लोग मर जाते हैं उनके विषय में विचिकित्सा है – कोई कहते हैं मरने के पश्चात् आत्मा यहीं पर रह जाता है और कुछ लोग कहते हैं कि यहां पर नहीं रहता। आचार्य जी मैं यह जानना चाहता हूं, इस विषय में आपका क्या विचार है? इस इच्छा को भलीभांति कहिए और यही मेरा तृतीय वर है। गूढ़ रहस्यमय और सारभूत विद्या को पढ़ाने से पहले आचार्य शिष्य की परीक्षा लिया करते थे। कहा भी है –

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि।
असूयकायानृजवेऽयताय न मा ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम्।। निरु. 2.5।।

भावार्थ – विद्या ब्राह्मण के पास आकर बोलती है – मेरी रक्षा करो क्योंकि मैं तेरी निधि हूं, संपति हूं, जो शिष्य गुरु से असूया करते हैं, कुटिल हैं, अजितेन्द्रिय हैं उनके लिए मेरा उपदेश मत करो। उत्कृष्ट गुणों से युक्त छात्रों को ही मुझको समर्पित कर दो। ऐसा करने से मैं बलवाली तेजस्विनी और शक्तिशाली बन जाऊंगी।

जितेन्द्रियत्वादि गुणों से युक्त ब्रह्मचारी को ही वेदोक्त विद्या दी जाती थी। तभी विद्या भी फैलती थी। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण के लिए जितेन्द्रिय महर्षि देव दयानंद को देख सकते हैं। महर्षि द्वारा प्राप्त हुई विद्या कितनी वीर्यवती हो गई।

आचार्य भी उस नचिकेता की परीक्षा अनेक प्रकार से लेते हैं। यहां पर आचार्य विषयक गंभीरता को दिखाते हुए कहते हैं –

देवैरत्रापि विचिकित्सितं पुरा न हि सुविज्ञेयमणुरेष धर्मः।
अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व मा मोपरोत्सीरति मा सृजैनम्।। 29।।

भावार्थ – हे नचिकेता! यह आत्मतत्व रूपी विद्या अत्यंत गंभीर है, देवताओं ने भी इस विषय में संदेह किया था, क्योंकि यह एक गूढ़तम विषय है। आप अन्य ही एक वर मांग लो। मेरे ऊपर दबाव मत डालो। भावुकता में आकर के लोग विद्या प्राप्ति के लिए शिक्षण संस्थाओं में जाते हैं, किंतु विषय की कठिनता को देखकर के, भयंकरता को देख कर के कुछ ही दिन में चले जाते हैं, तो क्या नचिकेता ऐसा ही तो नहीं करेगा? इसलिए आचार्य उसके सामने विषय की कठिनता को दिखा रहे हैं। अब आचार्य जी लुभावनी बातों से छात्र की परीक्षा लेते हैं –

शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य समाज टाण्डा के 127वें वार्षिकोत्सव की चित्रमय झलकियाँ

आर्य समाज मॉडल टाउन, अमृतसर में त्रिदिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य कार्यक्रम किया गया आयोजित

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों को सुनने के लिए उमड़ी भीड़

आचार्य गुरुबचन शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ विशेष यज्ञ

आर्य समाज मॉडल टाउन, अमृतसर के तत्वावधान में 16 से 18 नवम्बर, 2018 तक सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में गुरुकुल बरनावा, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश के प्रतिष्ठित विद्वान् आचार्य गुरुबचन शास्त्री एवं उनके साथ श्री सुमित जी शास्त्री विशेष रूप से पधारे हुए थे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की गरिमामयी उपस्थिति कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रही। प्रातः सायं निरन्तर स्वामी जी के प्रभावशाली प्रवचनों को सुनने के लिए अमृतसर से सैकड़ों गणमान्य महानुभावों ने उत्साह के साथ भाग लिया और व्याख्यान सुनने के उपरान्त सभी ने स्वामी जी से आग्रह किया कि वे पुनः अमृतसर के लिए उन्हें अपना समय देने की कृपा करें। हम और बड़े स्तर पर आयोजन करके इन विचारों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना चाहते हैं। कार्यक्रम में युवा संन्यासी स्वामी वेद प्रकाश जी नूरपुर, स्वामी वेद भारती दीनानगर, साध्वी विशोका यती जी हिसार आदि के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य की उपस्थिति भी बनी रही। इस कार्यक्रम के आयोजन में समाज के यशस्वी प्रधान श्री हीरालाल दुग्गल के अतिरिक्त उनके सहयोगी समाज के संरक्षक श्री रमेश दत्त मंत्री श्री देशबन्धु धीमान, स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती कमलेश चोपड़ा, मंत्राणि श्रीमती सुदर्शन ठुकराल, श्री जवाहर लाल मेहरा, श्री जनकराज दुग्गल, श्री वेद प्रकाश भल्ला, श्री आशीष मेहरा एवं श्रीमती पूजा मेहरा, श्री जवाहर लाल दुग्गल एवं उनके पूरे परिवार का विशेष सहयोग रहा।

तीनों दिन प्रातः 8 से 11 बजे तक एवं सायं 3 से 6 बजे तक यज्ञ एवं उपदेश का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली तरीके से चलता रहा। स्वामी आर्यवेश जी के वैदिक सिद्धान्तों से ओत–प्रोत व्याख्यान सुनकर सभी श्रोता मन्त्रमुग्ध होकर अत्यन्त प्रभावित हुए। स्वामी जी ने यज्ञ, संन्ध्या, पुरुषार्थ चतुष्टय एवं कर्मफल आदि विषयों पर विस्तार से सरल शैली में प्रकाश डाला। इस दौरान स्वामी आर्यवेश जी का प्रवास श्री ओम प्रकाश आर्य जी के घर पर रहा। बीच में वे श्री जवाहर लाल मेहरा के सुपुत्र श्री

आशीष मेहरा एवं उनकी पत्नी श्रीमती पूजा मेहरा का आतिथ्य स्वीकार कर उनके घर पर विश्रामार्थ गये। इसी प्रकार अमृतसर के प्रसिद्ध व्यवसायी एवं धार्मिकता से ओत–प्रोत समाजसेवी, दानवीर श्री जनकराज दुग्गल जी के घर पर भी जलपान हेतु स्वामी जी एवं ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र जी, जो पूरे कार्यक्रम में उनके साथ रहे, गये। आर्य समाज के साथ लगे श्री हर्ष–यश मेहरा एवं उनकी श्रीमती रमा मेहरा के घर पर स्वामी जी को जलपान हेतु निमंत्रित किया गया। अनेक परिवारों के निमंत्रण पर समयाभाव के कारण स्वामी जी पधार नहीं सके, लेकिन जो सम्मान उन्हें दिया गया वह अविस्मरणीय था।

यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गुरुबचन जी शास्त्री के आह्वान पर कई यजमान परिवारों ने नियमित यज्ञ करने एवं ब्रह्मयज्ञ अर्थात् संन्ध्या करने का संकल्प भी लिया। विदित हो कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी महाराज (श्रृंगी ऋषि) की प्रेरणा से स्व. श्री रामनाथ दुग्गल जी ने यज्ञ करने का जो संकल्प लिया था उसी संकल्प को अर्थात् अपने पिता के व्रतों को पूरा करते हुए उनके सुयोग्य सुपुत्र श्री हीरालाल दुग्गल प्रधान आर्य समाज मॉडल टाउन ने अपने भ्राता श्री जवाहर लाल दुग्गल एवं समस्त दुग्गल परिवार के सहयोग से वेद के उस मन्त्र को चरितार्थ किया जिसमें कहा गया है –

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचंवदतु शन्तिवान्।।

– अथर्व. 3/30/2

इस सामवेद पारायण यज्ञ के माध्यम से आर्य समाज मॉडल टाउन के प्रांगण में श्री हीरालाल दुग्गल ने उच्च कोटि के विद्वान् वक्ता स्वामी आर्यवेश जी को आमंत्रित कर एवं आचार्य गुरुबचन शास्त्री सरीखे प्रतिष्ठित विद्वान् को ब्रह्मा के रूप में प्रतिष्ठित कर अमृतसर नगर में एक शानदार कार्यक्रम आयोजित किया, इसके लिए वे स्वयं और आर्य समाज मॉडल टाउन के पदाधिकारी एवं समस्त सहयोगियों को विशेष बधाई। कार्यक्रम के दौरान जलपान एवं भोजन की समुचित व्यवस्था सभी आगन्तुक महानुभावों के लिए की गई थी।

आर्य समाज करनाल मार्ग, कैथल, हरियाणा का 47वाँ वार्षिकोत्सव 23 से 25 नवम्बर, 2018 को किया गया आयोजित

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यक्रम का किया उद्घाटन

आर्य समाज करनाल मार्ग, कैथल, हरियाणा का 47वाँ वार्षिकोत्सव 23 से 25 नवम्बर, 2018 तक धूमधाम से मनाया गया। इसका उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विशिष्ट उद्बोधन के द्वारा किया। स्वामी जी के अतिरिक्त उत्सव में वैदिक विद्वान् श्री रणधीर सिंह शास्त्री, वेदापदेशक श्री राजेश्वर मुनि व श्री भोपाल सिंह आर्य, करनाल के व्याख्यान एवं प्रसिद्ध आर्य युवा भजनोपदेशक श्री अरविन्द आर्य के भजनों का अत्यन्त प्रभावशाली कार्यक्रम हुआ। उत्सव प्रातः 8 से 11. 30 बजे तक और सायं 3 से 6 बजे तक चलता रहा। 25 नवम्बर को प्रातः 8 बजे से 1 बजे तक भजन तथा उपदेश के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के पुरोहित श्री कृष्ण कुमार शास्त्री रहे जिसमें कई यजमान परिवारों ने भाग लेकर यज्ञ को सम्पन्न कराया।

उत्सव की व्यवस्था में आर्य समाज के प्रधान श्री प्रीतपाल आर्य, मंत्री हरिकेश रविश आर्य एडवोकेट, कोषाध्यक्ष श्री नरेश गुप्ता सी.ए., उपप्रधान श्री अशोक आर्य एवं श्रीमती चन्द्रमुखी आर्या, उपमंत्री श्री रमेश मित्तल आदि पदाधिकारियों के अतिरिक्त श्री मनीराम आर्य प्रधान वेद प्रचार मण्डल, श्री रतन लाल आर्य, श्री देशराज आर्य, श्री प्रदीप राणा, श्रीमती सरोज आर्या, श्रीमती फूलमति आर्या, श्रीमती ममता आर्या, श्रीमती भरथो देवी आर्या आदि ने कार्यक्रम की सफलता के लिए विशेष प्रयत्न एवं पुरुषार्थ किया। आर्य समाज के मंत्री हरिकेश रविश आर्य एडवोकेट ने पूरे कार्यक्रम एवं इसकी व्यवस्था के साथ संयोजन बड़ी कुशलता के साथ संभाला।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यान को सुनने के लिए कैथल नगर के अनेक गणमान्य महानुभाव विशेष रूप से कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जिनमें श्री पवन कुमार आर्य प्रधान आर्य समाज क्योडम गेट, कैथल, श्रीमती रजनी गर्ग प्रधाना स्त्री आर्य समाज कैथल, श्री सत्यवीर आर्य, डॉ. होशियार सिंह आर्य प्रधान आर्य युवक परिषद् कैथल, श्री जयपाल आर्य राजौन्द, अध्यापक नेता श्री ओम प्रकाश आर्य, पूर्व प्रधान हरियाणा राजकीय अध्यापक संघ, मा. श्याम लाल आर्य, श्री अमित गुप्ता, श्री जयपाल आर्य प्रधान आर्य समाज पुण्डरी, श्री ब्रह्मदत्त शर्मा, श्री गौरीशंकर प्रधान लायंस क्लब आदि के नाम उल्लेखनीय है।

आर्य समाज करनाल रोड कैथल अत्यन्त सक्रिय आर्य समाज है। अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन, हरिद्वार में भी आर्य समाज के मंत्री श्री हरिकेश रविश आर्य के विशेष प्रयत्न एवं सभी अधिकारियों के सहयोग से विशेष आर्थिक सहयोग इस आर्य समाज की ओर से प्रदान किया गया। कार्यक्रम में स्वामी जी के साथ ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य तथा श्री धर्मेन्द्र आर्य भी रहे तथा उन्होंने स्वामी जी के व्याख्यान को मिशन आर्यावर्त के बुलेटिन से प्रसारित किया। जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज टाण्डा, जिला अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश का 127वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जी, आर्य समाज के वरिष्ठ नेता तथा सार्वदेशिक सभा के पूर्व कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य के नेतृत्व में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में जहाँ सैकड़ों महानुभावों ने भाग लिया वहीं दोनों संस्थाओं की छात्र एवं छात्राओं ने अपने हाथों में ओ३म् ध्वज लेकर आर्य समाज अमर रहे, ओ३म् का झण्डा ऊँचा रहे, वेद की ज्योति जलती रहे तथा वैदिक धर्म की जय के नारों से आसमान को गुंजा दिया। शोभा यात्रा के आगे मिश्री लाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज की छात्रा घोड़े पर महारानी लक्ष्मी बाई के रूप में अपने हाथ में तलवार लेकर विराजमान थी और जुलूस के आगे महिला शक्ति के शौर्य का प्रदर्शन कर रही थी। उसके पीछे पांच युवक वेद की पुस्तक हाथों में लेकर यह संदेश दे रहे थे कि दुनिया में वेद ज्ञान ही मानव मात्र को एक सूत्र में पिरो सकता है। वेद समस्त संकीर्णताओं से अलग हटकर मनुर्भव का संदेश देते हैं। यह शोभा यात्रा टाण्डा के विभिन्न बाजारों से गुजरती हुई जब मुख्य बाजार पहुँची तो वहाँ पर नगर के प्रतिष्ठित मुस्लिम नेताओं ने शोभा यात्रा का आगे बढ़कर स्वागत किया तथा सौंफ, मिश्री तथा इलायची आदि बांटकर सभी आर्यजनों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। उन्होंने स्वामी आर्यवेश जी को माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित करते हुए सम्बोधन के लिए आग्रह किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने लगभग 20 मिनट के उद्‌बोधन में आर्य समाज के उद्देश्य एवं मन्तव्यों की अत्यन्त सुन्दर, सरल एवं सटीक व्याख्या करते हुए नगरवासियों का सहयोग के लिए जहाँ धन्यवाद ज्ञापित किया वहीं उन्हें महोत्सव में भाग लेने का निमंत्रण भी दिया। स्वामी आर्यवेश जी ने समाज की ज्वलन्त समस्याओं यथा नशाखोरी, भ्रष्टाचार, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास, महिला उत्पीड़न, शोषण एवं चारित्रिक पतन के विरुद्ध अच्छे लोगों को इकट्ठे होकर जमकर अभियान चलाने का आह्वान किया और कहा कि जिस प्रकार स्वतंत्रता आन्दोलन में सभी मत–सम्प्रदायों तथा वर्गों के लोगों ने एकजुट होकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी थी उसी प्रकार समाज को खोखला करने वाली बुराईयों के विरुद्ध भी वर्तमान में सभी वर्गों एवं मत–सम्प्रदाय के लोगों को मिलकर संघर्ष करना चाहिए और समाज में व्याप्त परस्पर कटुता, विद्वेष, घृणा एवं नफरत की भावना को समाप्त करना चाहिए। आर्य समाज इस दिशा में पूरे देश का नेतृत्व करने के लिए सक्षम है और इस दिशा में प्रयत्नशील है। शोभा यात्रा का संयोजन श्री चन्द्रगुप्त मौर्य तथा सहसंयोजक श्री अनूप कुमार गुप्ता अत्यन्त कुशलता से कर रहे थे।

रात्रि को 7 से 10 बजे तक भजनोपदेश तथा प्रवचनों का कार्यक्रम चला जिसमें युगल किशोर हरदोई एवं कल्याण सिंह वेदी के भजन तथा स्वामी आर्यवेश जी का प्रवचन सभी उपस्थित श्रोताओं को सुनने को मिला। 21 नवम्बर को प्रातः यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी एवं सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रभावशाली प्रवचनों एवं युगल किशोर जी के भजनों को सुनकर लोग भाव–विभोर हो गये। इस अवसर पर श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने ईश्वर के स्वरूप एवं प्रलयकाल में प्रकृति, आत्मा एवं स्वयं ईश्वर की स्थिति एवं स्वरूप पर अत्यन्त प्रभावशाली प्रकाश डाला। उन्होंने मकड़ी का उदाहरण देकर बताया कि जैसे मकड़ी अपने चारो ओर मकड़जाल फैला देती है और जब उसको स्थान बदलना हो तो उस मकड़जाल को अपने अन्दर समेट लेती है, उसी प्रकार प्रकृति एवं जीवात्मा को ईश्वर अपने में समेट लेता है।

10.30 से 12.30 बजे तक आर्य युवा सम्मेलन गुरुकुल अयोध्या के कुलपति आचार्य नागेन्द्र शास्त्री जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस महत्त्वपूर्ण सम्मेलन का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान तथा मिशन आर्यावत के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी ने कुशलता के साथ किया। उनका सहयोग एवं सह–संयोजन श्री दिवाकर आर्य के द्वारा किया गया। सम्मेलन में ब्र. कुलदीप कुमार आर्य गुरुकुल गौतमनगर, ब्र. श्यामित्र आर्य गुरुकुल अयोध्या, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री संजय सत्यार्थी, मिश्री लाल आर्य कन्या इण्टर कालेज की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रशीषा आदि ने अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत कर युवाओं को प्रेरणा दी।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आशीर्वाद स्वरूप युवा पीढ़ी के लिए विशेष उद्‌बोधन देकर उनका मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि युवाओं को वर्तमान भौतिकवाद की चकाचौंध से हटकर तपस्वी जीवन व्यतीत करना चाहिए। पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार बाबू आनन्द कुमार आर्य ने इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी एवं युवा सम्मेलन के अन्य वक्ताओं तथा संयोजक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी का विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री आनन्द कुमार आर्य जी के सुपुत्र श्री मनीष कुमार ने सभी विद्वानों तथा वक्ताओं का अंगवस्त्र पहनाकर सम्मान किया।

रात्रि 7 से 10 बजे तक सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। 22 नवम्बर को प्रातः यज्ञ के उपरान्त 10.30 बजे से 12 बजे तक शंका–समाधान का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता अमेठी से पधारे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री दीनानाथ शास्त्री ने की। अपरान्ह 2 से 5 बजे तक नारी सशक्तिकरण सम्मेलन राष्ट्रपति पुरस्कार से पुरस्कृत श्रीमती सुदेश मल्होत्रा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसका संयोजन डी.ए.वी. एकेडमी की प्रधानाचार्या श्रीमती अनिता सिंह एवं मिश्री लाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रशीषा श्रीवास्तव रहीं। रात्रि को 7 से 8 बजे तक आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय तथा ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी के सारगर्भित व्याख्यान तथा 8 से 11 बजे तक राष्ट्र कवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी की अध्यक्षता तथा वीररस के कवि संजय सत्यार्थी के संयोजकत्व में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इन समस्त कार्यक्रमों में श्रोताओं की भीड़ इतनी उमड़ी कि बैठने का स्थान भी कम पड़ गया। श्री सारस्वत मोहन मनीषी दो दिन तक अपनी कविताओं से श्रोताओं को आनन्दित करते रहे।

23 नवम्बर को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के विशेष व्याख्यान एवं यजमान परिवारों को आशीर्वाद के साथ सम्पन्न हुई। मध्यान्ह 2 से 5 बजे तक वेद सम्मेलन प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प्रखर लेखक एवं वक्ता डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। सम्मेलन के पश्चात् चिन्हित जरूरतमन्द लोगों को कम्बल वितरित किये गये। इस कार्यक्रम के संयोजक श्री प्रदीप कुमार वर्मा रहे। इसी प्रकार रात्रि 7 से 10 बजे तक भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम चला तथा रात्रि 10.30 बजे इस चार दिवसीय कार्यक्रम का समापन समस्त विद्वानों का सम्मान तथा बाबू आनन्द कुमार जी के द्वारा सबके धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती जी लखनऊ, आचार्य सत्य प्रकाश आर्य बाराबंकी, डॉ. विधानचन्द्र आर्य रामनगर, पं. विज्ञमित्र शास्त्री, पं. देवनारायण पाठक, आचार्य ओम प्रकाश शास्त्री पुरोहित आर्य समाज टाण्डा आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। मुख्य विद्वानों में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय, श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी, श्री दीनानाथ शास्त्री लखनऊ, डॉ. ज्ञानेन्द्र शास्त्री अयोध्या, डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी दिल्ली, श्री संजय सत्यार्थी पटना आदि के व्याख्यान एवं प्रवचन विभिन्न सम्मेलनों में होते रहे। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम की व्यवस्था एवं आयोजन में श्री आनन्द कुमार आर्य के नेतृत्व में आर्य समाज के मंत्री श्री योगेश कुमार आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य, उपप्रधान श्री बनारसी लाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री रामसूरत मौर्य, उपमंत्री श्री बृजेश कुमार आर्य एवं श्रीमती अर्चना शास्त्री, सहकोषाध्यक्ष श्री वेद प्रकाश आर्य एवं पुस्तकाध्यक्ष श्री राममिलन मौर्य आदि अधिकारियों तथा दोनों शिक्षण संस्थाओं की प्रधानाचार्या श्रीमती अनिता सिंह एवं श्रीमती प्रशीषा श्रीवास्तव विद्यालय की समस्त अध्यापिकाएं एवं अध्यापक वर्ग तथा अन्य कर्मचारियों ने अथक परिश्रम करके पूरे कार्यक्रम को बड़े शानदार तरीके से सम्पन्न कराया। पाण्डाल, आवास एवं भोजन व्यवस्था में सर्वश्री वेद प्रकाश आर्य, श्री श्याम जी एवं तेज प्रकाश आर्य आय–व्यय परीक्षक का भी विशेष योगदान रहा।

शोक समाचार

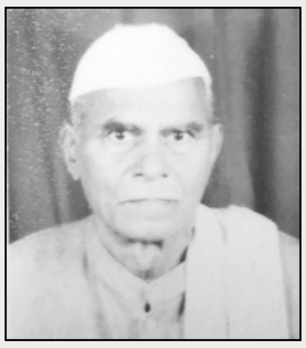

सार्वदेशिक सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री रविन्द्र कुमार दुबे तथा वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में कार्यरत उनके बड़े भ्राता श्री वीरेन्द्र कुमार के पिता श्री रामसेवक दुबे का 8 नवम्बर, 2018 को सायं 9 बजे आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 9 नवम्बर, 2018 को पूर्ण वैदिक रीति से कन्नौज के मेंहदी घाट श्मशान भूमि पर किया गया। वे 85 वर्ष के थे। वह अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, एक पुत्री, तीन पुत्र (सभी विवाहित) तथा पौत्र–पौत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग में 18 वर्ष तक सेवा देने के पश्चात् स्वतः त्याग पत्र देकर अपना सत्यनिष्ठ, धर्म परायण, सामाजिक जीवन व्यतीत करने का निर्णय लिया। उन्हें अपने क्षेत्र में स्पष्टवादिता के लिए जाना जाता था। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ, एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन उनके निवास स्थान ग्राम देवधरापुर जनपद–कन्नौज में 21 नवम्बर, 2018 को किया गया। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए हजारों लोग दूर–दूर से पधारे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा समस्त कार्यकर्ताओं ने उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शांति एवं सद्‌गति की प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदनायें प्रकट की।

— सम्पादक

वैदिक धर्म के ध्वजवाहक, स्वामी दयानन्द जी के परमभक्त श्री मोतीलाल आर्य जी के निधन पर शोक सभा का आयोजन

लगभग सात दशक तक आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के ध्वजवाहक एवं काशी आर्य समाज, बुलानाला के पुरोहित श्री मोती लाल आर्य जी के दुःखद निधन पर काशी आर्य समाज में दिनांक 4 नवम्बर, 2018 (रविवार) को शोक सभा का आयोजन किया गया, आर्य समाज के प्रधान श्रीनाथ सिंह पटेल की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में काशी आर्य विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य, डॉ. विशाल सिंह, श्री बृजभूषण सिंह, श्री प्रेमचन्द आर्य, श्री अजय आर्य, श्रीमती प्रतिभा सिंह, विभा आर्या, हेमा आर्या, सत्यनिष्ठा आर्या प्रभृति आदि आर्यजनों ने दिवंगत श्री मोतीलाल आर्य जी के बहुआयामी व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके निधन को आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति बतलाया। सभी ने आर्य कार्यकर्ताओं को उनके आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करने पर बल दिया।

इस अवसर पर वैदिक शांति प्रकरण का पाठ तथा यज्ञ का कार्य सम्पन्न करने के उपरान्त दो मिनट मौन धारण कर परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोक संतप्त परिजनों के लिए धैर्य धारण की शक्ति देने की प्रार्थना की गई, अन्त में शांति पाठ किया।

— प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री, आर्य समाज बुलानाला, वाराणसी–221001 (उ. प्र.)

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों की एक महत्त्वपूर्ण बैठक

स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हुई सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं परिषद् के प्रमुख पत्र 'राजधर्म' की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

10 मार्च, 2019 को स्वर्ण जयन्ती का भव्य समारोह मनाने का लिया गया निर्णय

हजारों आर्य युवकों का एक गणवेश एवं केसरिया पगड़ी में होगा प्रचण्ड शक्ति प्रदर्शन

नौजवानों! अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दो

आर्य समाज के सशक्त एवं सक्रिय युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की स्थापना सन् 1967–68 में युवाओं के प्रेरणा स्रोत, त्यागी, तपस्वी, तेजस्वी संन्यासी पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा की गई थी। परिषद् के तत्वावधान में हजारों युवा निर्माण शिविर आयोजित करके लाखों युवकों को आर्य समाज से जोड़ने का ऐतिहासिक योगदान किया है। परिषद् की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में परिषद् के संस्थापक पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के जन्मदिवस 10 मार्च, 2019 को एक भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित किया जा रहा है। इसी के साथ परिषद् के प्रमुख पत्र 'राजधर्म' के गौरवमय प्रकाशन के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित किया जायेगा।

यह दोनों कार्यक्रम एक साथ आयोजित होंगे। इस सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिए गत् 16 सितम्बर, 2018 को परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों की एक हंगामी बैठक परिषद् के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक में सम्पन्न हुई। बैठक में उपस्थित सभी कार्यकर्ता अत्यन्त उत्साहित थे और बड़े जोश–खरोश के साथ स्वर्ण जयन्ती समारोह को मनाने के लिए सभी ने पूरी ताकत लगाकर कार्य करने का संकल्प लिया। यह स्वर्ण जयन्ती समारोह आर्य समाज में युवाओं को दीक्षित करने के लिए अपनी विशेष भूमिका निभायेगा। परिषद् ने निश्चय किया है कि पिछले 50 सालों में जिन–जिन महानुभावों ने परिषद् में कार्य किया है उनका समारोह में विशेष सम्मान किया जायेगा। यह प्रयास किया जायेगा कि 50 जीवनदानी कार्यकर्ता परिषद् का कार्य करने के लिए उस दिन संकल्प ले सकें। स्वर्ण जयन्ती समारोह की विस्तृत योजना एवं कार्यक्रम शीघ्र ही तैयार करके पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा। बैठक में मुख्य रूप से परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, उपमंत्री प्रिं. आजाद सिंह जी, परिषद् की हरियाणा इकाई के पूर्व प्रधान श्री रामनिवास जी, डॉ. राजपाल आर्य, श्री सज्जन सिंह राठी, श्री अशोक आर्य, श्री अजीत पाल आर्य, श्री सत्यवीर आर्य, डॉ. होशियार सिंह, श्री श्यामलाल आर्य, श्री हरिकेश राविश एडवोकेट, श्री तलवीर सिंह आर्य, श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री जयवीर आर्य सोनी, मा. हरपाल सिंह, मा. प्रवीण कुमार, बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, कु. रिंकू आर्या, कु. शशि आर्या, एच.सी.एस., कु. रीमा आर्या आदि उपस्थित थे। बैठक का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने बड़ी कुशलता से किया।

काशी आर्य समाज में स्वामी दयानन्द के ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ का 149वाँ स्मृति दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

स्वामी दयानन्द ने सनातन तत्वज्ञान से भटके लोगों को रास्ता दिखवाया

19वीं शताब्दी में स्वामी दयानन्द जी ने वेदानुकूल मत को पुनर्प्रतिष्ठित किया, उन्होंने वेद क्रांति का शंखनाद कर सनातन तत्वज्ञान से भटके लोगों का वैश्विक मार्गदर्शन किया, पाखण्ड, अज्ञानता तथा कट्टरपंथ छोड़ने का आग्रह करते हुए सभी मतावलम्बियों को श्रेष्ठ आचरण अपनाकर 'आर्य बनाने की प्रेरणा दी। उक्त विचार स्वामी दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 149वें स्मृति दिवस कार्तिक शुक्ला द्वादशी मंगलवार को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश भारती ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

आर्य विद्वान पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतालाया कि स्वामी दयानन्द ने पौराणिक सम्प्रदायों के साथ जैन, बौद्ध, बाईबल तथा कुरान द्वारा प्रतिपादित विचारों की समीक्षा अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में की है जिससे लोगों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ी, व्याख्याओं में सुधार आया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपप्रधान श्री रमाशंकर आर्य ने कहा कि स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के शास्त्रार्थ आन्दोलन से सामाजिक सुधारों को बल मिला तथा दलितों को मंदिरों में प्रवेश मिला।

अध्यक्षीय सम्बोधन में श्रीनाथ सिंह पटेल ने बतलाया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद विषयक भ्रान्त धारणाओं का उन्मूलन कर वेदों की महानता का बोध कराया। श्री रमेश जी आर्य तथा श्री लल्लन जी आर्य ने मनोहारी भजनों की प्रस्तुति कर श्रोताओं को उत्साहित किया।

शास्त्रार्थ स्मृति दिवस में सर्वप्रथम प्रकाश नारायण शास्त्री मंत्री ने विषय प्रवर्तन किया, डॉ. विशाल सिंह, श्रीमती प्रतिभा सिंह, श्री बृजभूषण सिंह, श्री अजय आर्य, श्री हेमेन्द्र श्रीवास्तव, हेमा आर्या, विभा आर्या एवं सत्यनिष्ठा आर्या ने भी अपने–अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, पं. ज्ञान प्रकाश, श्री प्रेमचन्द्र आर्य तथा श्री रमेश जी आर्य ने यज्ञ आदि कार्य सम्पन्न कराया। यजमान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल, श्री हेमेन्द्र श्रीवास्तव, श्री रणजीत सिंह थे। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाश नारायण शास्त्री, धन्यवाद प्रकाश श्री बृजभूषण सिंह ने किया। अन्त में शांति पाठ सुश्री सत्यनिष्ठा आर्या ने किया।

– प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री, आर्य समाज बुलानाला, वाराणसी–221001 (उ. प्र.)

पृष्ठ 3 का शेष

उपनिषत् कालीन शिक्षा का स्वरूप है – यम और नचिकेता का संवाद

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशुहस्तिहिरण्यमश्वान्।

भूमेर्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि।। 24।।

अर्थात – हे नचिकेता! सौ–सौ वर्ष तक जीने वाले पुत्र और पौत्रों को मांग लो। बहुत सारे गो आदि पशु और हिरण्यादि संपत्ति को मांग लो। भूमंडल के विशाल खंड से होने वाले साम्राज्य को प्राप्त करो। और स्वयं भी सैकड़ों साल तक जीने की कामना करो। संपूर्ण कामनाएं मैं पूरी कर देता हूं। लेकिन ऐसा वर मत मांगो। उपनिषत् कालीन शिक्षा व्यवस्था में आचार्य छात्रों की परीक्षा अनेक प्रकार से लेते थे। इसका उदाहरण यहां पर कठोपनिषद् में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। जैसे खूंटे को गाड़ते समय हिला–हिला करके दृढ़ किया जाता है, ठीक उसी प्रकार से छात्र की मजबूती के लिए आचार्य जन भी कठिनता के भय से और एक से एक प्रलोभन से छात्रों की दृढ़ता को परखते थे। यम और नचिकेता के बीच में चल रहा संवाद गुरु शिष्य के बीच के सौहार्द वातावरण को भी दिखा रहा है। उपनिषत् कालीन शिक्षा का यह स्वरूप, आचार्य लोग कैसे–कैसे छात्रों के मानसिक चिंतनों को खोलते थे और छात्र भी किस प्रकार विनत होकर आचार्य के समक्ष जाते थे, इस पक्ष को उजागर कर रहा है। आचार्य जन भी छात्र की परीक्षा लेने के पश्चात ही ऐसी ऐसी विद्या, जोकि रहस्यमय है, को पढ़ाया करते थे। महर्षि यास्क की इन पंक्तियों को प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत कर रहा हूं।

यमेव विद्याः शुचिमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम्।

यस्ते न द्रुह्येत् कतमच्चनाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रह्मन्।। 2.4।।

– महर्षि दयानंद वेद विद्या आर्ष गुरुकुल, कुटिया, नलीखुर्द, करनाल, हरियाणा

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल जिला– मुजफ्फरनगर का 54वाँ वार्षिक महोत्सव 20 से 23 नवम्बर, 2018 तक विशाल स्तर पर हुआ आयोजित

गंगा स्नान के अवसर पर एकत्रित हुए हजारों लोगों को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया सम्बोधित

गुरुकुल के संस्थापक स्वामी आनन्दवेश जी महाराज ने की पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल जिला–मुजफ्फरनगर का 54वाँ वार्षिक महोत्सव 20 नवम्बर (मंगलवार) से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पावन ऋचाओं के मंत्रों के साथ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य यज्ञवीर शास्त्री जी रहे। गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, स्वामी चन्द्रदेव जी, आचार्य बिजेन्द्र जी, श्री मनोकान्त शास्त्री जी, श्री पवन वीर जी शास्त्री, श्री भुवन शास्त्री, श्री प्रेमशंकर मिश्रा प्राचार्य गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, आचार्य इन्द्रपाल, स्वामी आनन्दवेश जी प्रबन्धक गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, श्री सोमवीर शास्त्री, श्री कमलकान्त शास्त्री, श्री सहदेव बेधड़क भजनोपदेशक, श्री राजवीर आर्य भजनोपदेशक, महाशय रणवीर बेधड़क, आचार्य घनश्याम शर्मा जी आदि उपस्थित रहे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा आसन, स्तूप, सरिया मोड़ना, आग के गोलों से निकलना, मलखम्भ व रस्से पर आसन करना आदि आश्चर्यचकित कर देने वाले कार्यक्रम आचार्य राणा शास्त्री के दिशा निर्देश में प्रस्तुत किये गये। व्यायाम सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र टण्डन व मुख्य अतिथि अमित राठी युवा भाजपा नेता जिला पंचायत सदस्य रहे। वार्षिकोत्सव में विश्व शांति, शिक्षा, समाजसुधार, नशाबन्दी, व्यायाम व राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। वार्षिकोत्सव का समापन 23 नवम्बर, 2018 (शुक्रवार) को पूज्यपाद स्वामी आनन्दवेश जी के शुभाशीष के साथ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के अन्तिम दिवस राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के अवसर पर अपने धारा प्रवाह ओजस्वी उद्बोधन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गुरुकुल की पवित्र भूमि पर प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में सम्मिलित होने का अवसर मुझे मेरे प्रेरणास्रोत स्वामी आनन्दवेश जी महाराज के आशीर्वाद से प्राप्त होता है। आम जनता को जागरूक करने का यह अभिनव प्रयास गुरुकुल की भूमि पर होता है और सत्संग की गंगा में डूबकी लगाकर पवित्र होने का एक स्वर्णिम अवसर हम सबको प्राप्त होता है। स्वामी जी ने राष्ट्ररक्षा के आवश्यक बिन्दुओं पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए यक्ष और युधिष्ठिर के प्रसिद्ध और अत्यन्त प्रभावशाली संवाद को सुनाते हुए कहा कि राष्ट्ररक्षा अत्यन्त आवश्यक है। यदि राष्ट्र सुरक्षित रहेगा तो हम सब भी सुरक्षित रहेंगे। उन्होंने कहा कि उक्त संवाद में युधिष्ठिर ने कहा था कि वो राष्ट्र स्वतः मर जाता है जिसमें राजा धर्म से विमुख हो जाये, चरित्रहीन हो जाये, विलासी हो जाये और अपनी प्रजा की सुख–सुविधाओं का ध्यान न रखे तो वह राष्ट्र नष्ट हो जाता है। स्वामी जी ने देश की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज देश में युवा नशे की गिरफ्त में आ गया है। बहन–बेटियों में डर समाया हुआ है। धार्मिक पाखण्ड से जनता त्रस्त है। चारो तरफ भ्रष्टाचार, घोटाले तथा व्यभिचार का बोलबाला है। उन्होंने कहा कि आप सब इन परिस्थितियों से अच्छी तरह वाकिफ हैं। स्वामी जी ने अपने प्रेरणादायक वक्तव्य में महर्षि दयानन्द, चाणक्य और चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन की घटनाएं सुनाते हुए श्रोताओं को अत्यन्त भावुक कर दिया। श्रोताओं की आंखों में बहते हुए आंसू स्पष्ट देखे जा सकते थे। स्वामी जी ने कहा कि राजाओं का राजा

किसान जो कठोर परिश्रम करके हमारी भूख मिटाता है, वह किसान आज स्वयं भूखा मर रहा है। उसे उसकी मेहनत का, उसकी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है। अपनी विकट परिस्थितियों के कारण उसे आत्महत्या करनी पड़ रही है, यह कैसी आजादी है। स्वामी जी ने किसानों, मजदूरों और परिश्रम करके अपना पेट भरने वाले लोगों का आह्वान किया कि आपलोगों को संगठित होना पड़ेगा और अपनी लड़ाई खुद लड़नी पड़ेगी, क्योंकि आज भ्रष्ट नौकरशाह, भ्रष्ट राजनेता और भ्रष्ट उद्योगपतियों की मिलीभगत से देश का अन्नदाता दर–दर की ठोकरें खाने पर मजबूर है। उन्होंने कहा कि ये लोग देश में फूट डाल रहे हैं। कभी जाति–पांति के नाम पर, कभी साम्प्रदायिकता के नाम पर तो कभी धर्म के नाम पर हमें लड़ाया जा रहा है। अब समय आ गया है कि आप सब संगठित हो जायें और अपने भाग्य का निर्णय स्वयं करें। स्वामी जी ने कहा कि जिन लोगों का चरित्र अच्छा होता है, आचरण अच्छा होता है, खान–पान सात्विक होता है, जब ये लोग संगठित होते हैं तो उनके सामने कोई ताकत ठहर नहीं सकती। स्वामी जी ने कहा कि आप अपनी कमाई को नशे में उड़ा रहे हैं, फिजूलखर्ची में उड़ा रहे हैं, आज शिक्षा इतनी मंहगी हो गई है कि आप अपने बच्चों को शिक्षित भी नहीं कर पा रहे हैं। चारों तरफ धार्मिक पाखण्ड, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराईयाँ समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रही हैं। उन्होंने कहा कि याद रखो कि जहाँ सूर्य होता हैं वहाँ अंधेरा नहीं होता है, जहाँ धर्म होता है वहाँ अधर्म नहीं ठहर सकता और जहाँ सत्य होता है वहाँ झूठ की कोई विसात नहीं होती है। अतः अपने जीवन में सात्विकता लाओ, नशे से दूर रहो, अपनी कमाई का सदुपयोग करते हुए संगठित होकर अपनी लड़ाई स्वयं लड़ो। आप देखोगे कि सफलता आपके चरण चूमेंगी। स्वामी जी ने आह्वान करते हुए कहा कि जब भी आप पवित्र गंगा में डूबकी लगाओ तो कम से कम एक बुराई को छोड़ने का संकल्प अवश्य लो तभी आपका गंगा स्नान करना सार्थक होगा। स्वामी जी ने धार्मिक पाखण्ड की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि अपने ऊपर छाये अंधेरे से बाहर निकलो और धर्म के सही स्वरूप को पहचानों। आज गेरुए वस्त्र धारण कर छद्मवेशी साधु, संन्यासी भोली–भाली जनता की धार्मिक भावनाओं को भड़काकर लूट रहे हैं और ऐश्वर्य का जीवन जी रहे हैं। आज ऐसे कुछ पाखण्डी जेल के सीखचों के पीछे हैं। इनसे बचना है। स्वामी जी ने कहा कि प्रतिदिन सोने से पहले विचार करना चाहिए कि हमसे कोई गलत कार्य तो नहीं हुआ। अपने माता–पिता, सास–ससुर का सम्मान करो और प्रतिदिन वैदिक संस्कृति के आधार पंचमहायज्ञ को अपने जीवन में धारण करो। आर्य समाज वेद का प्रचार करता है और मनुष्य को सही मायने में मनुष्य बनाने का कार्य करता है। आप सब आर्य समाज से जुड़ें और अपने जीवन को सफल करें।

स्वामी आर्यवेश जी के हृदयग्राही प्रवचन को सुनकर एक व्यक्ति जिसने शराब पी रखी थी उसने माइक से सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि आज के बाद मैं कभी शराब का सेवन नहीं करूंगा। इससे पूर्व विशेष यज्ञ के अवसर पर भी यजमानों ने तथा आम जनता ने नशा तथा अन्य सामाजिक बुराईयों से दूर रहने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर बोलते हुए स्वामी आनन्दवेश जी महाराज ने स्वामी आर्यवेश जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि हमने सार्वदेशिक सभा के सभी प्रधानों से अपने कार्यक्रम में आने का अनुरोध किया लेकिन कोई नहीं आया। स्वामी आर्यवेश जी पहले प्रधान हैं जो इतने उच्च पद पर विराजमान हैं उन्हें जब भी हमने आमंत्रित किया स्वामी जी अपने व्यस्त समय से कुछ न कुछ समय निकालकर अवश्य आते हैं और हमारा ये विशेष कार्यक्रम उनके सान्निध्य और उनके प्रेरणादाई प्रवचन से पूर्णरूप से सफल हो जाता है। हम उनका अपने गुरुकुल और अपनी तरफ से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। स्वामी आनन्दवेश जी ने मिशन आर्यावर्त के निदेशक एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र जी का विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया जिनके प्रयासों से इस पूरे कार्यक्रम का लाइव प्रसारण दुनिया के 21 देशों में लाखों लोगों ने देखा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।